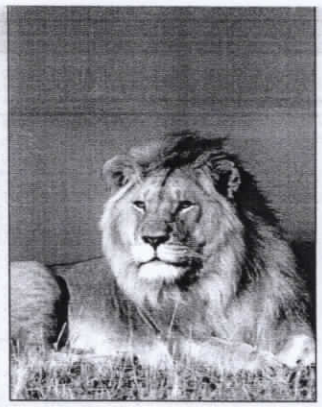

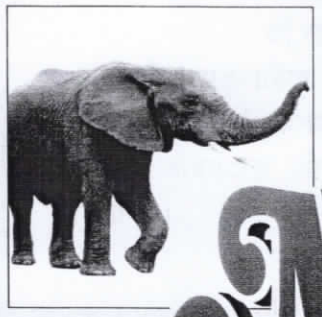

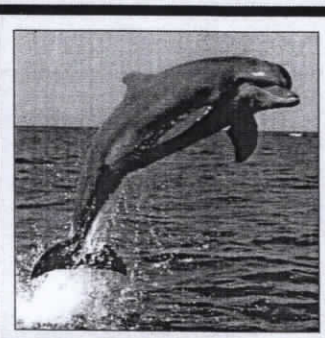

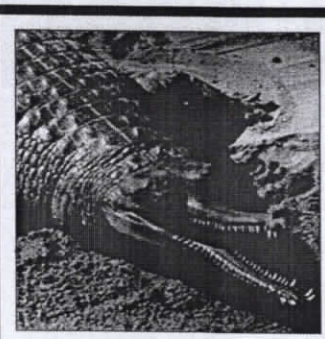

Journal of Contemporary Science

(An International Journal)

ISSN - 2278-8418

Medi-tech

2016

Published by

Dept. of Biotechnology

J.H. Govt. P.G. Lead College,

Betul (M.P.)

Dr. (Major) Satish Jain
Principal & Patron

Dr. Sukhdev Dongre
Convener

email-dongresukhdev13@gmail.com

डॉ. रामनारायण शर्मा : बुन्देली के सशक्त साहित्यकार

लोकेश कुमार नरवरे
डॉ. भीमराव अम्बेडकर शासकीय महाविद्यालय, आमला

डॉ.रामनारायण शर्मा पं.कन्हरदास के कुलदीपक हैं। पं.कन्हरदास ब्राह्मणों में श्रेष्ठ और आदरणीय अड़जरिया वंष से संबधित थे। इसी कारण से ब्राह्मणों के इतिहास और कुल में उनका स्थान सर्वोपरि था। पं. कन्हरदास डॉ.शर्मा के पूर्वज कुल के शलाका पुरूष रहें हैं। हिन्दी साहित्य के आचार्य कवीन्द्र केषवदास जी ने अपने तथा ग्रंथ 'वीरसिंहदेव चरित' में पं.कन्हरदास का परिचय इन शब्दों के दिया हैं।

''ज्यों वषिष्ट दषरथ मित्र,रामचन्द्र के विष्वामित्र।
वीरसिंह त्यों मंत्री कर्यों, कन्हरदास विप्र मति धर्यो ''

उल्लेख है कि पं.कन्हरदास ओरछा नरेष महाराजा वीरसिंह देव के मंत्री और राजगुरू थे,। वे वीरसिंह देव से लेकर राजा मधुकर शाह के शासनकाल तक इस पद पर प्रतिष्ठित रहे। कन्हरदासजी असाधारण मनीषा सम्पन्न प्रतिभाषाली और संस्कृतनिष्ठ पंडित थे। इन्हीं कन्हरदास की वंष–परम्परा में डॉ. रामनारायण शर्मा परिगणित हैं। डॉ.शर्मा के पूज्य पिताजी आचार्य चतुर्भज 'चतुरेष' फाग के फडों में 'मनप्यारे' के नाम से जाने जाते थे तथा एक प्रतिभा सम्पन्न आषुकवि थे। डॉ.शर्मा के अग्रज पं.कन्हैलाल शर्मा 'कलष' बुंदेली के सषक्त साहित्यकार रहे हैं। उनके दूसरे अग्रज पं.बलराम शास्त्री बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। वे ज्योतिषी वैद्य और कुषल समाज सुधारक और षिक्षक रहे वे हैं साहित्य के क्षेत्र में भी सफल साहित्यकारों में माने जाते हैं। साहित्यकार और कवियों की इसी परम्परा से प्राप्त काव्य–रचना के गुण और प्रतिभा ने बुंदेली साहित्य में डॉ.रामनारायण शर्मा जैसा नक्षत्र प्रदान किया हैं। उनके लेखन से जुड़े प्रेरक प्रसंग यहॉ उद्धृत करना मैं समीचीन समझता हूँ।

डॉ.रामनारायण शर्मा को साहित्य लेखन का गुण विरासत में प्राप्त हुआ हैं। उनका पूरा परिवार साहित्यानुरागी एवं सृजन धर्मा परिवार रहा हैं स्वाभाविक हैं, कि परिवेष ने उन्हें साहित्य सृजन की ओर उन्मुख किया। डॉ.शर्मा ने स्वयं लिखा हैं। कि विज्ञान के विद्यार्थी होते हुए भी साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही हैं'' मैंने सन् 1952 में हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। इस समय मेरी षिक्षा का माध्यम व स्परूप पूर्णतः बदल चुका था। विज्ञान का विद्यार्थी होते हुए भी मुझे हिन्दी में विषेष योग्यता प्राप्त हुई थीं हिन्दी के प्रति मेरे मन में प्रारम्भ से ही अभिरूचि रही हैं। में विद्यालय की साहित्यिक ओर सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लेने लगा था। विद्यालय में आयोजित होने वाली कवि–गोष्ठियों,भाषण,वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में मेरी सक्रिय भागीदारी होती थी। इनमें अपनी दक्षता के प्रदर्षन के फलस्वरूप मैं पुरस्कृत व सम्मानित होता रहा। यह पुरूष्कार और सम्मान ही उन्हें एक श्रेष्ठ साहित्यकार बनाने के प्रेरक तत्व रहे हैं।

जिन दिनों डॉ.शर्मा इलाहाबाद विष्वविद्यालय में बी.एस–सी. के छात्र थे उन दिनों प्रयाग विष्वविद्यालय के साहित्यिक वातावरण से प्रभावित हुए यहॉ उनकी प्रतिभा में निखार आता गया और साहित्य सृजन का बीजारोपण हुआ उन्होंने प्रयाग के साहित्यिक वातावरण के प्रभाव को इन शब्दों में स्पष्ट किया हैं –

''उन दिनों इलाहाबाद में कवि सम्राट सूर्यकांत त्रिपाठी निराला,डॉ.हरिवंषराय बच्चन,डॉ. रामकुमार वर्मा,फिराक गोरखपुरी,महादेवी वर्मा,सुमित्रानंदन पंत,अमरनाथ झा और लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय जैसे महान साहित्यकारों का दर्षन लाभ प्राप्त किया गंगा तट की सुरम्य झॉकी देखकर मेरा मन अभिभूत होता रहा और मैं सृजन की दिषा में उत्तरोत्तर बढ़ता रहा'' इस समय की तमाम विष्वविद्यालय